891/881

दैनिक जागरण
जागरण सिटी
पृ० 3
23.06.2014

धान की पौधशाला की करें निगरानी

यदि धान की पौधशाला लग गई हो तो ब्लास्ट व भूरा धब्बा रोग के प्रति सचेत रहें। लक्षण पाए जाने पर कार्बेंडिजम की दो ग्राम मात्रा एक लीटर पानी में मिलाकर तैयार घोल का छिड़काव करें। पूसा के भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों ने किसान को दी सलाह में कहा है कि यदि धान की पौध का रंग पीला पड़ रहा हो तो इसमें लौह तत्व की कमी हो सकती है। पौधों की ऊपरी पत्तियां यदि पीली और नीचे की पत्ती हरी हो तो यह लौह तत्व की कमी को दर्शाता है। इस समस्या के समाधान के लिए फेरस सल्फेट व चूने के घोल का छिड़काव करें।

ऐसे किसान जिन्होंने धान की नर्सरी में बुवाई नहीं की है, वे एक हेक्टेयर क्षेत्रफल में रोपाई के लिए 800 से एक हजार वर्ग मीटर क्षेत्रफल में पौध तैयार करें। नर्सरी के क्षेत्र को सवा मीटर चौड़ा तथा सुविधानुसार लंबी क्यारियों में बांट लें। बुवाई से पूर्व बीज का उपचार जरूर करें। पांच किलोग्राम बीज के लिए 10 से 12 ग्राम बावस्टीन, एक ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लिन को10 लीटर पानी में मिलाकर उपचार करें। वैज्ञानिकों का कहना है कि मानसून के सामान्य से कम रहने के पूर्वानुमान को देखते हुए किसानों को ऐसी किस्मों पर जोर देना चाहिए, जो कम समय में तैयार होती हैं। इससे सिंचाई में बचत होगी। मानसून को देखते हुए वैज्ञानिकों ने अभी से किसानों को खेत में मेड़बंदी का कार्य शुरू करने का आग्रह किया है। यह कार्य प्राथमिकता के आधार पर होना चाहिए। मजबूत मेड़ से खेत में बारिश का पानी टिके रहने में मदद मिलेगी। यदि मेड़ मजबूत नहीं होगा तो इससे पानी बाहर तो जाएगा ही, साथ ही यह मिट्टी की ऊपरी परत को भी अपने साथ ले जाएगी, जिससे मिट्टी की सेहत प्रभावित होगी। वैज्ञानिकों ने किसानों को दी सलाह में कहा है कि जहां सिंचाई की व्यवस्था कम है वहां धान की जगह अन्य फसलें लगाए, जिनमें पानी की जरूरत कम होती हो। ऐसी फसलों में अरहर, बाजरा, ग्वार व दलहनी फसलें शामिल हैं। यह समय अगेती फूलगोभी और बैंगन की पौधशाला बनाने के लिए उपयुक्त है। किसान यह प्रयास करें कि वे कीट अवरोधी नाइलोन की जाली का प्रयोग करें, ताकि रोग फैलाने वाले कीटों से फसल को बचाया जा सके। पौधशाला को तेज धूप से बचाने के लिए 40 फीसद छायादार नेट से साढ़े छह फीट की ऊंचाई पर ढक सकते हैं। अरहर की बुवाई इस सप्ताह की जा सकती है। बीज किसी प्रमाणित स्रोत से ही खरीदें। बीजों को बोने से पूर्व अरहर के लिए उपयुक्त राइबोजियम तथा फास्फोरस को घुलनशील बनाने वाले जीवाणुओं व फफूंद के टीकों से अवश्य उपचार कर लें। इस उपचार से फसल के उत्पादन में वृद्धि होती है। अरहर की उपयुक्त किस्मों में पूसा-2001, पूसा-992, पारस व मानक हैं। मिर्च के खेत में विषाणु रोग से ग्रसित पौधों को उखाड़कर जमीन में गाड़ दें। उसके बाद इमिडाक्लोप्रिड का खेत में छिड़काव करें। भिंडी की फसल में तुड़ाई के बाद यूरिया पांच से 10 किलोग्राम प्रति एकड़ की दर से खेत में डालें। इस मौसम में ग्वार, मक्का, बाजरा, लोबिया, भिंडी, सेम, पालक, चौलाई व अन्य फसलों की बुवाई के लिए खेत की तैयारी का कार्य शुरू कर दिया जाना चाहिए। बीज किसी प्रामाणिक स्रोत से ही खरीदें। किसान कद्दूवर्गीय सब्जियों में फल मक्खी की निगरानी करते रहें। इसके लिए मिथाइल यूजीनोल ट्रेप का प्रयोग कर सकते हैं। भिंडी, मिर्च व बेलवाली फसल में माइट, जैसिड व होपर की निरंतर निगरानी करते रहें। अधिक माइट पाए जाने पर फॉसमाइट का छिड़काव करें। बेबी कार्न की किस्म एचएम-4 व स्वीट कार्न की बुवाई के लिए यह उपयुक्त समय है।

प्रतिलिपि:-
1. निदेशक कार्यालय
2. संयुक्त निदेशक (प्रसार)
3. अधिष्ठाता/संयुक्त निदेशक (शिक्षा)
4. प्रभारी पी.पी.आई
5. प्रभारी कटैट
6. प्रभारी यू.एस.आई

सुनीता गुप्ता 23/6/14
प्रभारी पत्रिका एवं समाचार पत्र अनुभाग